“As a director, I strive to make the audience *in communion with* the artists”

Direction

Play Name: Yakshini ☆ Written by: Arvind Kumar ☆ Director : Sunita Bharti

Yakshini is first Hindi play on an Archeological Artifact "Didarganj Chauri-Bearer Female Figure"

Sunita Bharti also plays protagonist

3 Shows

जागरण सिटी
पटना
www.jagran.com

'यक्षिणी' ने सुनाई संग्रहालय की कहानी

पटना संग्रहालय के शताब्दी वर्ष समारोह के अंतिम दिन आयोजित हुए कार्यक्रम, कलाकृतियों के साथ प्रतियोगिता आयोजित

लक्ष्मी की प्रतिमा मान कर होने लगी यक्षिणी की पूजा...

Url of the play video: https://youtu.be/NDRHKH1bycA

पटना LIVE पटना
हिन्दुस्त

पटना म्यूजियम के शताब्दी समारोह के समापन पर बुधवार को हुई पेंटिंग प्रतियोगिता, यक्षिणी पर नाटक का हुआ मंचन

म्यूजियम की कलाकृतियों को कागजों पर उकेरा

पटना | हिन्दुस्तान प्रतिनिधि

पटना म्यूजियम के शताब्दी समारोह के समापन पर बुधवार को म्यूजियम परिसर में बच्चों ने पेंटिंग के जरिए म्यूजियम का महत्व बताया। म्यूजियम की अद्भुत कलाकृतियों को पेंटिंग के जरिए कागजों पर उकेरा।

समारोह के तीसरे दिन बुधवार को म्यूजियम की कलाकृतियों के ऊपर कला लेखन, पाठ एवं पेंटिंग प्रतियोगिता आयोजित हुई। इसमें राजधानी के कई स्कूलों के बच्चे शामिल हुए। बच्चों ने पेंटिंग में पटना म्यूजियम के पुरावशेषों और चित्रों, दुर्लभ सिक्कों, पांडुलिपियों, पत्थर और खनिज, तोप और शीशा की कलाकृतियों को दर्शाया। इसमें म्यूजियम की खास वैशाली में लिच्छिवियों द्वारा भगवान बुद्ध की मृत्यु के बाद बनवाए गए प्राचीनतम मिट्टी के स्तूप से प्राप्त बुद्ध के दुर्लभ अस्थि अवशेष वाली कलश मंजूषा, काफी पुराने चीड़ के एक वृक्ष का जीवाश्म और चामर ग्राहिणी यक्षिणी (दीदारगंज-यक्षिणी) एक विश्व-विख्यात कलाकृति जिसे देखने के लिए विदेश से भी लोग आते हैं उसे पेंटिंग में दिखाया गया। त्रिनेत्र आर्ट स्टूडियो की ओर से विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

यक्षिणी के मिलने से म्यूजियम आने तक की कहानी : समापन समारोह के दूसरे सत्र में पटना म्यूजियम की शान यक्षिणी नाटक का मंचन किया गया। इसमें चामर ग्राहिणी यक्षिणी के मिलने से लेकर पटना संग्रहालय तक आने की कहानी प्रदर्शित की गई।

दो भागों में प्रदर्शित नाटक को दर्शकों ने खूब सराहा। पहले भाग में यक्षिणी कैसे मिली इसे दिखाया गया और दूसरा भाग मौर्य काल की पृष्ठभूमि पर है। चामर-धारिणी जैसे कालजयी कलाकृति का मूर्तिकार कौन था और इसकी प्रेरणा कौन थी। नाटक में कल्पना के आधार पर तर्क के साथ इसका जवाब दर्शकों को मिला। दो घंटे तक चलने वाले इस नाटक में बुलकनी का प्रदर्शन सवश्रेष्ठ रहा। बुलकनी का किरदार सुनीता भारती ने निभाया। इस नाटक के लेखक अरविंद कुमार और निर्देशक सुनिता भारती थी। मिथिलेश कुमार सिन्हा ने पुरोहित और अमात्य हर्षदेव के पात्र को जीवंत किया। चंदन कुमार ने बकलू ग्रामीण मजदूर और महानायक जयराम की भूमिका निभायी। उन दोनों को सर्वश्रेष्ठ कलाकार के खिताब से नवाजा गया। इस नाटक द हेरिटेज कंसोर्टियम पश्चिम पटेल नगर के संवेदक विभाष कुमार ने संस्था फेसेज को एक सुंदर प्रस्तुति के लिए 21 हजार रुपए का दान सुनीता भारती को प्रदान किया गया। भारतीय कला भवन वाराणसी के पूर्व निदेशक डॉ. डीपी शर्मा ने नाटक की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार की प्रस्तुति अपने जीवन काल में यक्षिणी के ऊपर नहीं देखी। इस मौके पर पुस्तक यक्षिणी का विमोचन हुआ। फेसेज यक्षिणी नाटक में सर्वश्रेष्ठ अभिनय के लिए मिथिलेश कुमार सिन्हा एवं चंदन कुमार को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

पटना म्यूजियम के शताब्दी समारोह के समापन पर बुधवार को चामर ग्राहिणी यक्षिणी के मिलने से लेकर पटना संग्रहालय तक आने की कहानी नाटक के जरिए प्रदर्शित की गई। • हिन्दुस्तान

निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को किया पुरस्कृत

अंत में मंगलवार को आयोजित निबंध लेखन वाचन प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया गया। इसका चयन निर्णायक मंडल ने किया। मंडल में काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ चितरंजन प्रसाद सिन्हा, संग्रहालय के पूर्व निदेशक उमेश चंद्र द्विवेदी , पटना संग्रहालय के शोध सहायक शिव कुमार मिश्र, भैरव लाल दास शामिल थे। धन्यवाद शंकर सुमन ने किया।

हृदय रोगों प
करेंगे देशभ

पटना | कार्यालय संवाददाता

हृदय की बीमारियां, कारण, उपचा और बचाव विषय पर देश के लगभ तीन सौ हृदय रोग विशेषज्ञ करेंगे। आठ और नौ अप्रैल को गांधी मैदान स्थित एक होटल में हृदय रोग विशेषज्ञों क सम्मेलन होगा।

पहले दिन सुबह 11 बजे वैज्ञानि सत्र का उद्घाटन देश के चर्चित हृद रोग विशेषज्ञ डॉ. अशोक सेठ करेंगे विशेषज्ञ मुख्य रूप से देश में हर्ट अटै की बढ़ती घटनाएं और मृत्यु दर क कैसे कम किया जाए इस पर मंथन करेंगे बुधवार को गांधी मैदान स्थित ए होटल में आयोजित प्रेसवार्ता आयोजन समिति के चेयरमैन डा.आर अग्रवाल, आईजीआईएमएस के हृद रोग विभाग के हेड डॉ. बीपी सिंह, ड एके झा, डॉ. यूसी शामल, डॉ. अरवि कुमार, डॉ. एसएस चटर्जी, डॉ. बी भारती, डॉ. अजय कुमार सिन्हा, ड प्रमोद कुमार ने कहा कि इस

मां के दर्शन के लि

अथमलगोला। चैत्र नवरात्रि के नौवें दि की देवी मां दुर्गा की आराधना कर वि लिए पहुंचे। प्रखंड के सबनीमा, छे साहेब कुटिया में दर्शन व पूजन के लि दानापुर में शहर के श्रीश्री दक्षिणेश्वरी मिश्र व बृज मोहन मिश्र ने हवन य गोला रोड और देवी स्थान उसरी खु

Play Name: **Jaychand Ke Aansu** ★ Written by: **Dr. Chhotu Narayan Singh** ★ Director : **Sunita Bharti**

Sunita Bharti also plays Sanyukta in the play

लाइफ पटना @prabhatkhabar.com 30.01.2018 10

नाट्य मंचन

कालिदास रंगालय और गांधी मैदान में किया गया नाटक का मंचन

...और जयचंद पर आक्रमण कर देता है मुहम्मद गोरी

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

[illegible]

कालिदास रंगालय में नाटक प्रस्तुत करते कलाकार

हे राम ... बापू को बिहारी जन का सलाम

पटना. [illegible]

हो बुजदिल की कद्र, दोस्त यह बात बहुत खोटी है...

कालिदास रंगालय

पटना | कार्यालय संवाददाता

एक काव्यात्मक प्रस्तुति। कलाकार छंदों में संवाद बोलते रहे और लोग मग्न होकर देखते रहे। कालिदास रंगालय में सोमवार शाम एक अलग तरह की प्रस्तुति देखने को मिली। फेसेस के कलाकारों ने डॉ छोटू नारायण सिंह द्वारा लिखित 'जयचंद के आंसु' नाटक पेश किया। सुनिता भारती के निर्देशन में इसका मंचन हुआ।

इस नाटक के केंद्र में खलनायक [illegible] था। एक ऐसा खलनायक जिसे आज भी इतिहास माफ नहीं कर पाया है। गद्दारी के लिए उसके नाम का प्रयोग होता है। जी हां, 1192 में हुए मोहम्मद गोरी और पृथ्वीराज के युद्ध के दौरान [illegible]

नाटक के कलाकार थे

सुनिता भारती, डॉ शंकर सुमन, कुमार विक्रम, आमिर हक, रवि आनंद, आशुतोष सर्राफ, रोहन मिश्र, चिन्मय माजी, कुंदन कुमार, मो सदरुद्दीन ।

हिन्दुस्तान पटना • 30 जनवरी 2018

24

Url of the play video:
https://youtu.be/WbIY5XJcQ7c

दैनिक जागरण पटना, 30 जनवरी 2018

गद्दारों के लिए मौत की सजा भी बहुत छोटी है

कालिदास रंगालय के प्रेक्षागृह में नाटक 'जयचंद के आंसू' का मंचन

कलाकारों ने पृथ्वीराज चौहान की शौर्य गाथा को किया पेश

'हो बुजदिल की कद्र, दोस्त यह बात बहुत खोटी है, गद्दारों को सजा मौत की सजा से भी बहुत छोटी है'। 'सजा मौत से भी बढ़कर होती कुछ अगर जहां में, देता तुझको वही किंतु ऐसी कुछ सजा कहां है'। मोहम्मद गौरी ने इसी संवाद के द्वारा जयचंद को सजा दे रहा होता है। जिसने अपने स्वार्थ के लिए देश के साथ गद्दारी की थी। काव्य की कुछ ऐसी पंक्तियां जिसके बहाने कलाकार इतिहास के पन्नों में दर्ज देश भक्त पृथ्वीराज चौहान की शौर्य गाथा को पेश कर रहे थे। वहीं मोहम्मद गौरी को पृथ्वीराज पर आक्रमण करने के लिए कन्नौज का राजा जयचंद का सहयोग करते दिखाया गया। आपसी द्वेष, मद और भौतिक स्वार्थ से अभिभूत होकर जयचंद अपनी संस्कृति और राष्ट्र से विद्रोह करता है किंतु इसका परिणाम स्वयं उसके लिए घातक होता है। प्रबंध काव्य का नाट्य-रूपांतरण पहली बार दर्शकों को देखने को मिला। फाउंडेशन फॉर आर्ट कल्चर एथिक्स एंड साइंस के बैनर तले डॉ. छोटू नारायण सिंह लिखित एवं अरविंद कुमार द्वारा नाट्य- रूपांतरित एवं सुनीता भारती के निर्देशन में सोमवार को कालिदास रंगालय के प्रेक्षागृह में 'जयचंद के आंसू' का मंचन किया गया। नाटक में दिखाया गया, पृथ्वीराज चौहान का राजकुमारी संयोगिता का हरण करके कन्नौज से ले जाने के बाद राजा जयचंद का वह अपमान सीने में तीर की तरह चुभ रहा था। वह किसी कीमत पर पृथ्वीराज का विनाश चाहता था। जयचंद अकेले पृथ्वीराज से युद्ध करने का साहस नहीं कर सकता था। उसने गौरी का साथ देते हुए अपने देश में विद्रोह करता है। युद्ध में पृथ्वीराज की हार हुई और उधर देशद्रोही जयचंद का मार उसके राज्य पर अधिकार कर लिया जाता है। आक्रामक होते हुए भी पृथ्वी राज के लिए आदर का भाव रखता है किंतु वह गद्दारों से नफरत करता है।

Play Name: Bhamashah ☆ **Written by: Dr. Chhotu Narayan Singh** ☆ **Director : Sunita Bharti**

Sunita Bharti also plays two major roles in the play

पटना LIVE सिटी

प्राचार्य मौजूद रहे।

भामाशाह की दानवीरता मंच पर जीवंत हुई

पटना | कार्यालय संवाददाता

दिन-रात धन जोड़ने में जो सुख नहीं मिला, वह आज उसे देश के लिए दान करके मिला है..., पराधीनता चाहे शारीरिक हो या मानसिक देश का कलंक है..., यदि यह संपत्ति उसे मिटा सकी तो मुझे इस धरती पर ही स्वर्ग का सुख मिल जाएगा...जब यह संवाद भामाशाह की भूमिका निभा रहे मिथिलेश कुमार सिन्हा बोल रहे थे, तब दृश्य देखने लायक था। कालिदास रंगालय में सोमवार शाम ऐतिहासिक नाटक 'भामाशाह' जीवंत हुआ। फेसेस संस्था के कलाकारों ने डॉ. छोटू नारायण सिंह लिखित इस नाटक को सुनिता भारती के निर्देशन में मंचित किया।

इतिहास की बात : हल्दी घाटी युद्ध (1576) के बाद महाराणा प्रताप जंगल में हैं। अकबर कूटनीति से काम ले रहा है। वह जानबूझ कर मेवाड़ में कृत्रिम भुखमरी की स्थिति पैदा कर रहा है, ताकि संधि करने के लिए महाराणा विवश हो जाएं। इधर जनता परेशान है। सैनिकों के सामने भी भुखमरी की स्थिति पैदा होती जा रही है। लेकिन भामाशाह आगे आते हैं। अपने देश और दानवीरता का परिचय देते हैं। जीवनभर की जमापूंजी महाराणा को दान कर देते हैं। 25 हजार सैनिकों के लिए 12 वर्षों तक के लिए रख-रखाव की पर्याप्त व्यवस्था हो जाती है। इन्हीं सब बातों को मंच पर दिखाया गया। फेसेस के कलाकारों ने इसे प्रभावी बनाने की अच्छी कोशिश की। खासकर भामाशाह की भूमिका निभा रहे मिथिलेश कुमार सिन्हा, सुनिता भारती, कुमुद रंजन और डॉ शंकर सुमन ने बढ़िया अभिनय किया।

कालिदास रंगालय में सोमवार शाम ऐतिहासिक नाटक 'भामाशाह' का मंचन करते कलाकार। • हिन्दुस्तान

नाटक के कलाकार : सुनिता भारती, डॉ. शंकर सुमन, कुमुद रंजन, मिथिलेश कुमार सिन्हा, अंशुमन कुमार, विशाल कुमार, अंकित, रोहन मिश्र, और नरेंद्र, हिमांशु साजी, मो.सदरुद्दीन।

मंच से परे : प्रकाश- उपेंद्र कुमार, संगीत- सुजय सिंह, वस्त्र विन्यास- अरविंद कुमार, मेकअप- अंजु कुमारी, आर्ट- विशेन्द्र नारायण सिंह।

पटना जागरण सिटी

ताल से राजधानी में की आमद बेअसर

[illegible]	18-20	24-28
[illegible]	6-8	10-12
[illegible]	8-10	12-14
[illegible]	10-12	15-20
[illegible]	15-18	18-20
[illegible]	20-25	20-25
[illegible]	60-80	80-100
[illegible]	20-2	22-28
[illegible]	20-24	30-40
[illegible]	80-100	100-120
[illegible]	80-100	120-140
[illegible]	40-50	30-40

प्रतिष्ठा लौटाने के लिए भामाशाह ने किया त्याग

Play Name: Main Hoon Patna Sangrahalay (Sololoqui) ☆ **Written by: Arvind Kumar**
Director : Sunita Bharti

'मैं हूं पटना संग्रहालय' से बताया, विस्तृत इतिहास

पटना. एकल अभिनय 'मैं हूं पटना संग्रहालय' के माध्यम से पटना म्यूजियम के जन्म से लेकर सौ साल पूरा होने तक की पूरी कहानी बहुत ही रोचक ढंग से कही गयी. साथ ही, इसमें म्यूजियम की विभिन्न दीर्घाओं और यहां संग्रहित पुरावशेषों की विशेषताओं को भी आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया गया. पूरे अभिनय के दौरान अभिनेता बुल्लु की भाव भंगिमा और प्रस्तुति इतनी जानदार थी कि मौके पर मौजूद दर्शक उसे एकटक देखते रहे. रंग बिरंगी रौशनी और कंप्यूटर के माध्यम से स्क्रीन पर दिखाये गये स्व सच्चिदानंद सिन्हा और पटना हाइकोर्ट के उस हिस्से की तसवीर जहां सौ वर्ष पहले पटना म्यूजियम की स्थापना की गई थी, भी रोचक लग रही थी. बीच बीच में बज रही म्यूजिक और तालियों की गड़गड़ाहट भी आकर्षक ऑडियो इफेक्ट पैदा कर रही थी.

कार्यक्रम में कोरस गायन ने भी बांधा समां

बुल्लु कुमार के एकल अभिनय के बाद फैसेस के सचिव सुनिता भारती और शालिनी के द्वारा गाया गया कोरस गीत 'सौ वर्ष से खड़ा हुआ मैं पटना संग्रहालय हूं...' भी आकर्षक रहा. गीत के बोल में पूरे पटना संग्रहालय के इतिहास को संक्षिप्त रूप से समेटने का प्रयास किया गया है, जो प्रशंसनीय बन पड़ा है. धुन इतनी कर्णप्रिय है कि हॉल में उपस्थित कई श्रोता खुद ब खुद इसे गुनगुनाने लगे.

...ी बार देखा स्कूल, नयी यूनिफॉर्म में कोई दि...

पटना म्यूजियम के 100 वर्ष पूरे होने पर समारोह कल से

EVENT NEXT

पटना • डीबी स्टार

पटना म्यूजियम के 100 वर्ष पूरे होने पर तीन से पांच अप्रैल तक तीन दिवसीय समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इसको लेकर म्यूजियम को दुल्हन की तरह सजाया जा रहा है। इस दौरान विभिन्न विषयों पर राष्ट्रीय सेमिनार और सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे। इसमें भाग लेने के लिए देशभर से कई चर्चित इतिहासकार और शिक्षाविद् आ रहे हैं। उद्घाटन तीन अप्रैल को कला संस्कृति मंत्री शिवचंद्र राम करेंगे। उद्घाटन समारोह के बाद नाट्य संस्था फैसेस की ओर से मैं हूं पटना संग्रहालय नाम से एकल अभिनय पर बुल्लु कुमार प्रस्तुति देंगे। इसके बाद सेमिनार में छत्तीसगढ़ सरकार के पुरातत्व सलाहकार पद्मश्री एके शर्मा, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के पूर्व निदेशक डॉ. अमरेंद्र नाथ, नेशनल म्यूजियम के संजीव कुमार सिंह, शिक्षाविद् डॉ. जया एस पार्थवक, डॉ. विभा त्रिपाठी, डॉ. तारा सिन्हा व्याख्यान देंगी।

चार अप्रैल को सुबह 10.30 बजे से 12.30 बजे तक व्याख्यान होगा। इसके बाद पटना संग्रहालय और फैसेस संस्था के संयुक्त तत्वावधान में पटना संग्रहालय बच्चों की नजर से विषय पर आलेख-वाचन प्रतियोगिता होगी।

पांच अप्रैल को प्रथम सत्र में 10.30 बजे से पटना संग्रहालय और त्रिनेत्र आर्ट स्टूडियो के संयुक्त तत्वावधान में हर कलाकृति कुछ कहती है विषय पर लेखन और कविता वाचन होगा। वहीं दूसरे सत्र में यक्षिणी नाटक का मंचन स्कूल थियेट्रिकल आर्ट और फेसेज की ओर से किया जाएगा। इसमें दीदारगंज से प्राप्त हुई और बिहार की पहचान बन गई यक्षिणी के इतिहास से जुड़े पहलुओं को कलाकारों के द्वारा पेश किया जाएगा। इसकी जानकारी पटना म्यूजियम के सहायक संग्रहालयाध्यक्ष डॉ शंकर सुमन ने दी। इस कार्यक्रम में पटना म्यूजियम गीत भी पहली बार पेश किया जाएगा।

This Play is History of Patna Museum Presented Theatrically (a TiE project)

Url of the play video:
https://youtu.be/12sigznDUso

Play Name: Andha Yug ☆ Written by: Dharmveer Bharti ☆ Asst. Director : Sunita Bharti

3rd Show

Sunita Bharti also played Gandharee in this play

यह अजब युद्ध है, नहीं किसी की भी जय

DRAMA

ये थे कलाकार

डॉ चतुर्भुज रंग पत्रकारिता सम्मान से किए गए सम्मानित

गांधी चौक का हुआ मंचन

नाटक में दिखी देवन मिसिर की बुद्धिमानी

ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव के अंतर्गत हुआ 'अंधा युग' का मंचन

मंच पर दिखा महाभारत

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

नाटक 'अंधा युग'

यह संवाद रहा बेहतरीन

ये कलाकार थे मौजूद

देवन मिसिर : का साथ शुरू हुआ स्व. ए. जमाल नाट्य महोत्सव

पीयू में ग्रेजुएशन फाइनल इयर का एग्जाम आज से

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

अंतिम तिथि 3 मार्च

Play Name: Shershaah ⭐ Written by: Dr. Chaturbhuj ⭐ Asst. Director : Sunita Bharti

Also played Lad Malika in this play

ACTIVITY

मंच पर जीवंत हुई शेरशाह की बहादुरी

पटना • डीबी स्टार

अपनी बुद्धिमत्ता और बहादुरी से ताकतवर मुगल सल्तनत को खत्म कर अपनी बादशाहत कायम करने वाले बिहार के सपूत शेरशाह सूरी की कहानी दिखी मंगलवार को कालिदास रंगालय में मंचित नाटक शेरशाह में। प्रसिद्ध रंगकर्मी डॉ. चतुर्भुज द्वारा रचित इस ऐतिहासिक नाटक में शेरशाह सूरी की जिंदगी के कई पहलुओं से दर्शकों को रूबरू कराया गया। रणधीर सिंह निर्देशित इस नाटक का मंचन माध्यम फाउंडेशन की ओर से किया गया था।

नाटक में इतिहास के इस महान नायक के व्यक्तित्व को दिखाया गया। नाटक में दिखा कि शेरशाह सूरी का नाम पहले फरीद खां था और वह बिहार के सासाराम का रहने वाला था। शेर को एक ही वार में मार गिराने के कारण उसका नाम शेर खां पड़ा। अपनी बुद्धिमत्ता और बहादुरी से भारत का सम्राट हो गया और इतिहास का प्रसिद्ध व्यक्ति बना। पांच साल के अपने शासनकाल में ही उसने लोकहित में इतने काम किए जिन्हें आज भी याद किया जाता है। ग्रैंड ट्रंक रोड का निर्माण उसकी दूरदर्शिता को दिखाता है।

यह बहादुर शासक महिलाओं की भी बेहद इज्जत करता था। नाटक में दिखाया गया कि युद्ध में हार चुके हुमायूं की बेगम को सम्मान के साथ अपने शौहर से मिलवाया। कालिंजर के किले को जीतने के क्रम में अपने द्वारा छोड़े गए हथगोले से वह बुरी तरह से जल गया जो बाद में उसकी मौत का कारण बना। यह महान शासक अपनी इच्छा के मुताबिक मृत्यु के बाद अपने गृहनगर सासाराम के मकबरे में दफन किया गया।

श्रीकृष्ण विज्ञान केंद्र • साइंस डे पर 500 छात्रों ने निकाली साइंस रैली

बच्चों ने कहा–विज्ञान जाने

फैशन शो के ऑडिशन

दिव्यांगों ने दिखाया ज

बिहार दिवस पर दिव्यांग बच्चे दिखाएंगे

नाटक में दिखी शेरशाह की बुद्धिमत्ता और वीरता

■ न्यूज ब्यूरो

पटना।

कालिदास रंगालय में डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में आयोजित पांच दिवसीय छठे अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव का आगाज गुरुवार को हुआ। महोत्सव के

'शेरशाह सूरी' के मंचन के साथ डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में आयोजित नाट्य महोत्सव शुरू

पहले दिन नाटक 'शेरशाह सूरी' का मंचन किया गया। नाटक के मंचन से पहले संस्था कला जागरण व ... कलाकारों ने ... पत्रकारिता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए पत्रकार डॉ. ... को डॉ. चतुर्भुज रंग पत्रकारिता सम्मान 2017 प्रदान किया गया। वहीं ... नाट्य सम्मान 2017 से कलाकार ... कुमार सम्मानित किया गया।

कालिदास रंगालय में नाटक 'शेरशाह सूरी' का मंचन करते कलाकार।

महोत्सव में डॉ. चतुर्भुज लिखित और रणधीर सिंह निर्देशित नाटक 'शेरशाह सूरी' का मंचन किया गया। नाटक में शेरशाह की बुद्धिमत्ता और वीरता को दर्शाया गया। वह अपनी बुद्धि क्षमता की वजह से ... हासिल करता है ... मुगल सल्तनत को उखाड़ फेंकने की कसम पूरी करने की रणनीति बनाता है। साथ ही उसमें कामयाबी हासिल कर हिन्दुस्तान पर अपना झंडा फहराता है। कालिंजर के किले को जीतने के क्रम में अपने द्वारा छोड़े गए हथगोले से बुरी तरह जल कर घायल हो जाता है और वहीं अंतिम सांस लेता है। उसने अंतिम क्षणों में देखा कि कालिंजर के किले पर शेरशाह के नाम का पताका लहरा रहा है।

नाटक में अभिनय करने वालों में सुनीता भारती, अरविंद कुमार, राम राज, पारस झा, ऋतु राज, मालती सिन्हा, मानसी श्रीवास्तव, आर. नरेन्द्र, सफुद्दीन, सोनी कुमारी, चंदन, कंचन वर्मा, अजय कुमार श्रीवास्तव, मनीष मेहता, राकेश मेहता, प्रिंस, नन्द किशोर मेहता आदि ने भाग लिया।

Play Name: Naya Bangla ☆ Written by: A. K. Mukharji ☆ Asst. Director : Sunita Bharti

Also played the main female role in the play

कालिदास रंगालय • अनिल मुखर्जी लिखित 'नया बंगला' का निर्देशन किया सुमन कुमार ने

पूरे परिवार को बर्बाद कर देता है भ्रष्टाचार से कमाया हुआ धन

पटना • डीबी स्टार

धन कमाने की इच्छा हर मनुष्य में होती है, हर कोई बेहतर जीवनस्तर के लिए धन कमाना चाहता है लेकिन कई बार लोग धन कमाने के लिए अनैतिक कार्यों या भ्रष्टाचार का सहारा लेते हैं। लेकिन वह भूल जाते हैं कि भ्रष्ट तरीके से आने वाला धन जिस तेजी से आता है उससे कहीं तेजी से चला भी जाता है। भ्रष्टाचार से कमाया धन कमाने वाले के साथ उसके पूरे परिवार पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। कुछ इन्हीं बातों को दिखाया गया कालिदास रंगालय में सोमवार की शाम मंचित नाटक 'नया बंगला'।

अनिल कुमार मुखर्जी के लिखे इस नाटक का निर्देशन वरिष्ठ निर्देशक सुमन कुमार ने किया था। [illegible]

रंगसर्जना के उत्थान के संकल्प के साथ नाट्य महोत्सव पूरा

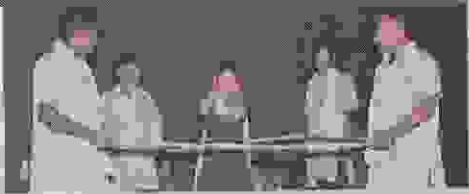

कलाकार

[illegible]

अंतिम दिन दो नाटकों का मंचन

[illegible]

4 से 10 फरवरी तक होगी फिल्म मेकिंग कार्यशाला

पटना • डीबी स्टार

[illegible]

कालिदास रंगालय | रंग सृष्टि की ओर से चल रहे नाट्य महोत्सव के अंतिम दिन सुमन कुमार के निर्देशन में 'नया बंगला' ने दिखाया

अर्थहीन महत्वाकांक्षा के कारण बर्बाद होता परिवार

पटना • डीबी स्टार

महत्वाकांक्षा अच्छी बात है लेकिन यह महत्वाकांक्षा जब अर्थहीन बन जाए तो समाज को काफी नुकसान पहुंचाती है। इसी अर्थहीन महत्वाकांक्षा के कारण कई परिवार बर्बाद हो चुके हैं। ऐसे ही एक परिवार की कहानी दिखी बुधवार की शाम कालिदास रंगालय में मंचित नाटक 'नया बंगला' में। यहां रंग सृष्टि की ओर से चल रहे नाट्य महोत्सव के अंतिम दिन इसका मंचन किया गया।

नाट्य संस्था कला जागरण की ओर से मंचित इस नाटक के निर्देशक थे सुमन कुमार। [illegible]

कलाकार

- सुनीता भारती, सुजाता कुमारी, अमित रंजन, दिव्या कुमारी, नीतिश कुमार, शैलेश कुमार
- नाटककार - अनिल कु. मुखर्जी
- सहायक निर्देशक - सुनीता भारती
- निर्देशक - सुमन कुमार

[illegible]

Play Name: Vijay Vibhuti ☆ Written by: Dr. Chhotu Narayan Singh ☆ Asst. Director : Sunita Bharti

हिंसा से कभी दिल नहीं जीत सकते

DRAMA

डीबी स्टार। पटना

हिंसा न कभी किसी घटना का समाधान हो सकती है और न ही हिंसा से कभी किसी का का दिल जीता जा सकता है। मगध सम्राट अशोक जो मानता था कि राजाओं के लिए सत्य और अहिंसा अर्थहीन शब्द है उसे भी अंत में अहिंसा की शरण में आना पड़ा। यह बात कह गया मंगलवार को कालिदास रंगालय में मंचित नाटक विजय विभूति। बिहार नाट्यकला प्रशिक्षणालय, पटना की प्रस्तुति इस नाटक के निर्देशक थे उपेंद्र कुमार। नाटक में अहिंसा के महत्व को सम्राट अशोक के प्रसंग में दिखाया गया।

यह थी कहानी

नाटक में दिखाया गया कि धर्मांतरण के पूर्व मगध सम्राट अशोक एक क्रूर और अति-महत्वाकांक्षी शासक था। वह मानता था कि सम्राट कभी अहिंसक नहीं हो सकता है। एक बार सम्राट अशोक बुद्ध का संदेश लेकर आने वाले भिक्षु का उपहास करते हैं, निराश भिक्षु अशोक के दरबार में यह कह कर चला जाता है कि - समय आने पर आप स्वयं अहिंसा के महत्व को समझेंगे।

कुछ दिनों बाद सम्राट अशोक अपनी असीमित युद्ध लिप्सा के अधीन हो कालिंग पर चढ़ाई करते हैं। युद्ध में लाखों जानें जाती है जिसे देखकर अशोक का क्रूर हृदय भी द्रवित हो उठता है। वह युद्ध समाप्ति की घोषणा करते हैं और इस भीषण रक्त-पात के लिए स्वयं को दोषी मानते हुए पश्चाताप करते हैं। तब उन्हें बौद्ध भिक्षु की बात याद आती है जिसे उन्होंने दरबार में उचित सम्मान नहीं दिया था। उनका हृदय परिवर्तित हो जाता है और वह बौद्ध धर्म की शरण में जाने की घोषणा करते हैं। वह मानते हैं कि धरती और संपत्ति नहीं बल्कि उनके हृदय का परिवर्तन ही कालिंग - विजय की सच्ची विभूति है।

निर्देशक और प्रकाश परिकल्पना	उपेंद्र कुमार
नाट्यकार	डॉ छोटू नारायण सिंह
सहायक निर्देशक	सुनीता भारती
मंच परिकल्पना	प्रदीप गांगुली
रूप सज्जा	वंदना घोष
प्रस्तुति नियंत्रक	अशोक घोष
प्रस्तुति प्रभारी	अरुणा कुमार सिन्हा
संगीत संयोजन	अरविंद कुमार सिंह
प्रकाश संचालन	राजकुमार शर्मा

यह थे कलाकार

युवराज कुमार, दीपक मिश्रा, रतन कुमार, सोनू शंकर, भावना शर्मा, वैभव विशाल, रणविजय सिंह, चक्रपाणि पाण्डेय, प्रमोद कुमार, मुन्ना राय, और सुनीता भारती।

Direction of Short Films

Apart from theater, Sunita Bharti regularly produces and directs short films in Hindi and regional languages of Bihar for You Tube Channel Foundation for Art Culture Ethics & Science to train students in acting.

Url for videos : https://goo.gl/YXB7ro

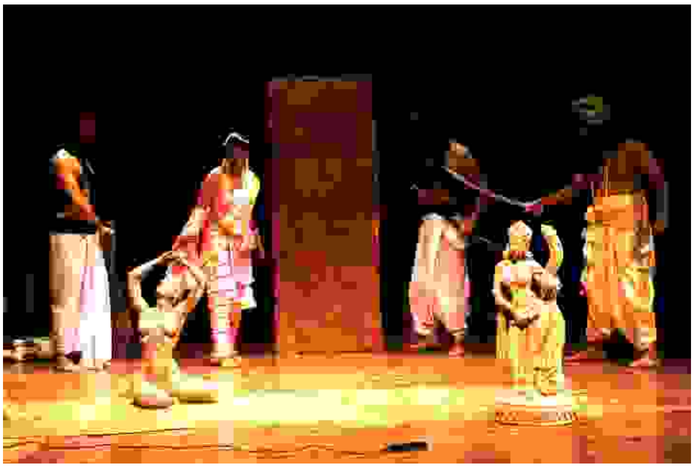

YAKSHINI

BHAMASHAH

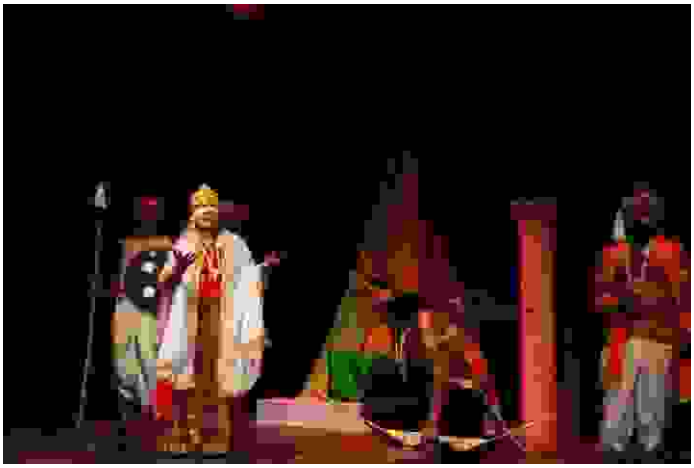

ANDHA YUG

MAIN HOON
PATNA SANGRAHALAY

YAKSHINI

BHAMASHAH

MAIN HOON
PATNA
SANGRAHALAY

JAYCHAND KE ANSU